19

कक्षा – सातवीं विषय - संस्कृत

पाठ 10 भर्तृहरिपद्यानि

1 मनसि – – – – – – – – – कियन्तः

हिन्दी - मन, वाणी और शरीर में सत्कर्म रूपी अमृत से भरे हुए, तीनों लोकों का अनेक प्रकार के उपकारों से कल्याण करने वाले और दूसरों के थोड़े से भी गुणों को सर्वदा पर्वत की तरह बड़ा मानकर, अपने हृदय में प्रसन्न होनेवाले सत्पुरुष (संसार में) कितने हैं, अर्थात् ऐसे सज्जन बहुत कम हैं।

2 केयूरा: – – – – – – – – भूषणम्

कंगन मनुष्य की शोभा नहीं बढ़ाते, न ही चन्द्रमा की तरह चमकते हार, न ही सुगंधित जल से स्नान; देह पर सुगंधित उबटन लगाने से भी मनुष्य की शोभा नहीं बढ़ती और न ही फूलों से सजे बाल ही मनुष्य की शोभा बढ़ाते हैं केवल सुसंस्कृत और सुसज्जित वाणी ही मनुष्य की शोभा बढ़ाती है। समस्त आभूषण नष्ट हो जाते हैं लेकिन वाणी का आभूषण नष्ट नहीं होता।

3 दुर्जन: – – – – – – – – भयंकर:

हिन्दी - विद्या से सुशोभित होने पर भी दुष्ट व्यक्ति को उसी प्रकार त्याग देना चाहिए जिस प्रकार मणि से सुशोभित सर्प किसके लिए भयंकर नहीं होता। अर्थात् सभी के लिए भयंकर होता है।

4 कुसुमस्तबकस्येव – – – – – – .. वनेऽथवा।

हिन्दी उच्च आत्म सम्मान के साथ लोगों को फूल की तरह दो चरणों हैं या तो वे सिर्फ दुनिया के शीर्ष पर होना चाहिए या दूर सूखना स्थान

हिन्दी - मनस्वी पुरुष की स्थिति फूलों के गुच्छे की तरह दो प्रकार की होती है। जिस प्रकार फूलों का गुच्छा या तो सभी लोगों के मस्तक पर चढ़ता है अथवा वन में ही झड़ जाता है। उसी प्रकार मनस्वी पुरुष या तो सम्मान प्राप्त करते हैं अथवा नष्ट हो जाते हैं

5 अज्ञ: –

मूर्ख को सरलता पूर्वक समझाया जा सकता है। विद्वान को उससे भी अधिक सरलता से समझाया जा सकता है किन्तु जिस अल्प ज्ञानी को अपने ज्ञान का मिथ्या अभिमान हो उसे ब्रह्मा भी नहीं समझा सकते।

Scanned with CamScanner

6 हिन्दी - दुर्गम पर्वतों में, जानवरों के साथ दिशाहीन भ्रमण भी श्रेष्ठ है। मूर्ख जनों का सम्पर्क इन्द्र देव के भवनों में भी न हो।

4. संस्कृत में उत्तर दीजिए —

(क) मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णाः त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः परगुण परमाणून्पर्वतीकृत्य नित्यं निजहृदि विकसन्तः एतादृशाः सन्ताः स्वल्पा सन्ति।

(ख) वाणी एका पुरुषं समलंकरोति।

(ग) विद्ययाऽलंकृतोऽपि दुर्जनः परिहर्तव्यः।

(घ) मनस्विनः वृत्तिः कुसुमस्तवकस्येव द्वयी भवति।

(ङ) विशेषज्ञः सुखतरमाराध्यते।

(च) मूर्खजनैः सह सम्पर्कः न वरम्।

(छ) ~~सर्वत्र विहितं~~ मूर्खस्य औषधं नास्ति।

5. सन्धि-विच्छेद कीजिए —

चन्द्रः + उज्ज्वलाः	स्तबकस्य + एव
न + अलंकृता	वने + अथवा
वाणी + एका	वृत्ति + मनस्विनः
वाक् + भूषणम्	भवनेषु + अपि
अलंकृतः + अपि	सूर्यः + आतपः
नाग + इन्द्रः	निशातः + अंशुकेन
संग्रहैः + च	प्रयोगैः + विषम
सर्वस्य + औषधम्	न + अस्ति + औषधम्

Scanned with CamScanner

7 संस्कृत में अनुवाद कीजिए -

(क) उपकारैः परान् ~~प्रसीद~~ प्रसीदयन्तु जनाः अल्पाः सन्ति।

(ख) वस्तुतः वाक्रूपी आभूषणं अस्ति।

(ग) दुर्जनः विद्वान् आसी तु अपि त्याज्य।

(घ) मूर्खजनः सर्वत्र अनादरं प्राप्नोति।

(ङ) धृष्टजनेन कोऽपि प्रसन्नं न भवति।

(च) उपचारे आलस्यं उचितं न भवति।

(छ) मनस्विनः जनः सर्वदा सम्मानं प्राप्नोति।

8 श्लोक की हिन्दी

श्लोकों

हिन्दी आग को पानी से बुझाया जा सकता है, सूर्य की तीव्र (तेज) धूप को छाते से रोका जा सकता है। मतवाले हाथी को तीक्ष्ण अंकुश से वश में किया जा सकता है, साँड और गधे को डंडे से रोका जा सकता है। भयंकर रोग को दवाओं से दूर किया जा सकता है तथा विष अनेक प्रकार के मंत्रों के प्रयोग से उतारा जा सकता है। इस प्रकार से संसार में सबकी दवा शास्त्रों में विहित है किंतु मूर्ख को उचित मार्ग पर लाने के लिए अथवा उसकी मूर्खता को दूर करने के लिए कोई दवा नहीं है। ... नास्त्यौषधम् ॥

पाठ 11 - भगवान् महावीरः
कक्षा - सातवीं , विषय - संस्कृत

1 संस्कृत में उत्तर दीजिए -

(क) महास्वामिनः जन्म विदेह प्रान्ते कुण्डलपुर नगरे अभवत्।

(ख) तस्य मातुः नाम प्रियकारिणी आसीत्।

(ग) सा वैशाली नरेशस्य चेटकस्य पुत्री आसीत्।

(घ) महावीर जयन्ती चैत्रमासस्य शुक्लपक्षे त्रयोदश्यां आयोज्यते।

(ङ) महावीरः द्वादशवर्षपर्यन्तं तपः अकरोत्।

(च) अणुव्रतानि पञ्च सन्ति।

(छ) महावीरः कार्तिककृष्णामावस्यां पावापुरनगरे च निर्वाणपदमलभत।

2 संस्कृत में अनुवाद कीजिए -

(क) भगवान् ऋषभदेवः जैनानां प्रथमस्य प्रथमः तीर्थंकरः अस्ति।

(ख) भागवतपुराणे तस्य विस्तृतं वर्णनं अस्ति।

(ग) ऋषभदेवस्य पुत्रः भरतः चक्रवर्ती राजा आसीत्।

(घ) महावीर स्वामी अन्तिमं तीर्थंकरः अभवत्।

(ङ) सः प्राणिनां हितं अकरोत्

(च) तीर्थंकराः चतुर्विंशति एव भवन्ति।

(छ) महावीरः पावापुरे निर्वाणपदं अलभत।

Scanned with CamScanner

Red Wings
Page No. ___ Date ___/___/20___

6 सन्धि-विच्छेद कीजिए –

नगरं + आसीत्	गण + अध्यक्ष
त्रिशाला + अपि	वसुन्धरा + अलंकरोत्
नाम + अन्यापि	तद् + अनन्तर
स्नानम् + अलभत्	महत्त्वपूर्ण + अवदानं
सत् + मति	अस्मान् + पूर्व

Scanned with CamScanner